अध्याय 17.
तिर्यञ्चगति

1. तिर्यञ्चगति किसे कहते हैं ?

1. जिस नामकर्म का निमित्त पाकर आत्मा तिर्यञ्च भाव को प्राप्त होता है, वह तिर्यञ्चगति है।
2. जो मन, वचन और काय की कुटिलता को प्राप्त हैं, जिनकी आहारादि संज्ञाएँ सुव्यक्त हैं और जिनके अत्यधिक पाप की बहुलता पायी जाती है, उनको तिर्यञ्च कहते हैं और उनकी गति को तिर्यञ्च गति कहते हैं। (जीवकाण्ड, 148)
3. तिरोभाव को अर्थात् नीचे रहने बोझा ढ़ोने लायक कर्मोदय से तिरोभाव को प्राप्त हों, वे तिर्यञ्च योनि वाले हैं। (राजवार्तिक, 4/27/3)

2. तिर्यञ्चगति में कौन-कौन से जीव आते है ?

देव, नारकी एवं मनुष्य के अलावा शेष सब जीव तिर्यञ्चगति वाले कहलाते हैं। अर्थात् एकेन्द्रिय, दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चार इन्द्रिय एवं पञ्चेन्द्रिय में पशु, पक्षी, सर्प आदि।

3. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च के तीन भेद कौन से हैं ?

पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च के तीन भेद निम्न हैं-

1. **जलचर**-जो जल में रहते हैं, वे जलचर कहलाते हैं। जैसे-मछली, मगर, केकड़ा, ओक्टोपस (अष्टबाहु) आदि।
2. **नभचर**-आकाश में उड़ने वाले जीव, नभचर कहलाते हैं। जैसे-कोयल, मैना, तोता, चिड़िया आदि ।
3. **थलचर**- जो पृथ्वी पर रहते हैं, वे थलचर कहलाते हैं। जैसे-हाथी, घोड़ा, गाय, बकरी आदि।

नोट- ये तीनों भेद चर (पञ्चेन्द्रिय) की अपेक्षा से हैं विकलेन्द्रिय की अपेक्षा से नहीं।

4. क्षेत्र की अपेक्षा पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चों के कितने भेद हैं ?

क्षेत्र की अपेक्षा पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चों के दो भेद हैं-कर्मभूमिज तिर्यञ्च और भोगभूमिज तिर्यञ्च।

5. भोगभूमिज तिर्यञ्चों का आहार क्या होता है ?

भोगभूमि में सिंहादि तिर्यञ्च भी शाकाहारी होते हैं, वे अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार माँसाहार के बिना कल्पवृक्षों से प्राप्त सामग्री का भोग करते हैं। (तिलोयपण्णत्ती, 4/397)

6. क्या भोगभूमि में जलचर, थलचर एवं नभचर तीनों भेद होते हैं?

नहीं। भोगभूमि में जलचर जीव एवं विकलचतुष्क (2, 3, 4 एवं असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय) नहीं होते हैं, लवण समुद्र, कालोदधि समुद्र एवं स्वयंभूरमण समुद्र कर्मभूमि सम्बन्धी हैं, यहाँ जलचर रहते हैं, किन्तु शेष समुद्र भोगभूमि सम्बन्धी हैं, वहाँ जलचर नहीं रहते हैं। भोगभूमि के नदी, तालाबों में भी जलचर नहीं होते हैं एवं विकलचतुष्क भी नहीं होते हैं। यही कारण है कि सौधर्म इन्द्र तीर्थङ्कर बालक के जन्माभिषेक के लिए क्षीरसागर (5 वां समुद्र) का जल लाता है। क्योंकि उसमें त्रस जीव नहीं रहते हैं।
(कार्तिकेयानुप्रेक्षा, 144 गाथा की टीका)

7. तिर्यञ्चगति में कौन-कौन से दुःख हैं ?

तिर्यञ्चगति में अनेक प्रकार के दुःख हैं। सिंह, व्याघ्र अपने से कमजोर पशुओं को खा जाते हैं,आकाश में गिद्ध चील उड़ते हुए पक्षियों को झपटकर पकड़ लेते हैं,जल में बड़े-बड़े मच्छ छोटी-छोटी मछलियों को खा जाते हैं, इनसे बच गए तो भूख, प्यास, रोग के दुःखों को सहन करना पड़ता है, छेदन-भेदन के दुःख बहुत हैं, सांड को बैल बनाया जाता है, सुअर के बाल उखाड़े जाते हैं, इनसे बच गए तो म्लेच्छ, भील, धीवर आदि मनुष्य उसे मार डालते हैं और आज 21वीं सदी में तिर्यञ्चों के दुःखों का पार नहीं हैं, बूचड़खाने में प्रतिदिन लाखों पशु काटे जाते हैं। (कार्तिकेयानुप्रेक्षा, 40-44)

8. क्या सभी तिर्यञ्चों को ऐसा दुःख होता है ?

नहीं। भोगभूमिज तिर्यञ्चों के केवल सुख ही होता है और कर्मभूमिज तिर्यञ्चों के सुख व दुःख दोनों होते हैं। (ति. प., 5/300)

9. तिर्यञ्चों के कितने गुणस्थान होते हैं ?

तिर्यञ्चों में 1 से 5 तक गुणस्थान होते हैं।
एकेन्द्रिय से असंज्ञी पञ्चेन्द्रियों तक मात्र प्रथम गुणस्थान होता है।
कर्मभूमिज संज्ञी पञ्चेन्द्रिय में 1 से 5 तक गुणस्थान होते हैं।
भोगभूमिज तिर्यञ्चों में 1 से 4 तक गुणस्थान होते हैं।
संज्ञी संमूर्च्छन तिर्यञ्चों में 1 से 5 तक गुणस्थान होते हैं।

10. संज्ञी संमूर्च्छन तिर्यञ्चों की क्या विशेषताएँ हैं ?

यह अन्तर्मुहूर्त काल में सर्व पर्याप्तियों से पर्याप्त हो पुनः अन्तर्मुहूर्त विश्राम करता हुआ एवं एक अन्तर्मुहूर्त में विशुद्ध होकर के संयमासंयम भी प्राप्त कर सकता है और एक पूर्व कोटि काल तक देशसंयम का पालन कर सकता है। जैसे-मच्छ, कच्छप, मेंढक आदि जीव, किन्तु इनका वेद नपुंसक ही रहता है एवं ये प्रथमोपशम सम्यक्त्व प्राप्त नहीं कर सकते हैं। मात्र क्षयोपशम (वेदक) सम्यक्त्व प्राप्त कर सकते हैं। (श्री धवला, पुस्तक 4/18/350)

11. क्या भोगभूमि में भी पञ्चमगुणस्थानवर्ती तिर्यञ्च एवं विकलचतुष्क पाए जाते हैं ?

भोगभूमि में आदि के 4 गुणस्थान ही होते हैं एवं विकलचतुष्क नहीं होते हैं, किन्तु पूर्व के बैरी देव यदि कर्मभूमि से उनका अपहरण करके भोगभूमि में छोड़कर चले जाते हैं तो वहाँ भी विकलचतुष्क एवं पञ्चम गुणस्थानवर्ती तिर्यञ्च पाए जाते हैं। (श्री धवला, पुस्तक 4/8/168-189)

12. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च के पाँच प्रकार कौन-कौन से होते हैं एवं उनकी आयु कितनी होती है ?

जलचर	मछली आदि	1 पूर्व कोटि
परिसर्प	गोह, नेवला, सरीसृप आदि	9 पूर्वांग
उरग	सर्प	42,000 वर्ष
पक्षी	भैरुण्ड आदि	72,000 वर्ष
चतुष्पद	भोगभूमिज	3 पल्य

(राजवार्तिक, 3/39/5)

गणना – 1 पूर्वांग = 8400000 (चौरासी लाख वर्ष) एवं 8400000 पूर्वांग का एक पूर्व होता है। एक पूर्व में वर्ष 70560000000000 होते हैं।

नोट–तिर्यञ्चों की जघन्य आयु अन्तर्मुहूर्त है।

अभ्यास

सही या गलत बताइए –

1. दूध तिर्यञ्च गति का जीव है।
2. भोगभूमि में बैल नहीं होते हैं।
3. मक्खी नभचर है।
4. क्षीरसागर समुद्र में एकेन्द्रिय जीव होते हैं।
5. भोगभूमि की गाय दूध देती है।
6. भोगभूमि में सिंह शाकाहारी होते हैं।
7. दो इन्द्रिय जीव पञ्चेन्द्रिय जीव को कर्मभूमि से भोगभूमि ले जा सकता है।
8. तीन गति वाले जीव तिर्यञ्चों को दुःख देते है।

अन्यत्र खोजिए –

1. तिर्यञ्चगति मार्गणा में तिर्यञ्चों के कितने भेद हैं ?
2. कौन से स्वर्ग तक के देव तिर्यञ्चों का अपहरण कर सकते हैं ?

जिनवाणी स्तुति

माता तू दया करके कर्मों से छुड़ा देना।
इतनी सी विनय तुमसे चरणों में जगह देना॥ टेक॥

माता आज मैं भटका हूँ माया के अन्धेरे में।
कोई नहीं मेरा है इस कर्म के रेले में।
कोई नहीं मेरा है तुम धीर बंधा देना॥

जीवन के चौराहे पर मैं सोच रहा कब से।
जाऊँ तो किधर जाऊँ यह पूछ रहा मन से।
पथ भूल गया हूँ मैं, तुम राह दिखा देना॥

लाखों को उबारा है हमको भी उबारो तुम।
मझधार में है नैया उस पार लगा दो तुम।
मझधार में अटका हूँ उस पार लगा देना॥